गद्य खंड: 'दो बैलों की कथा' (लेखक: प्रेमचंद)

रचना से संवाद (मेरे उत्तर मेरे तर्क)

प्रश्न 1. कहानी में हीरा और मोती का आपसी संबंध किस गुण को मुख्य रूप से दर्शाता है?

(क) प्रतिस्पर्धा और प्रतिद्वंद्विता

(ख) एकता और सहयोग

(ग) गर्व और दंभ

(घ) विद्रोह और क्रोध

सटीक उत्तर: (ख) एकता और सहयोग

- **उपयुक्तता का तर्क:** पूरी कहानी में हीरा और मोती हर संकट का सामना मिलकर करते हैं। चाहे साँड़ को संगठित होकर हराना हो या काँजीहौस में एक-दूसरे के लिए रुकना, दोनों का यह व्यवहार उनके बीच की अटूट एकता और आपसी सहयोग को ही प्रमाणित करता है।

प्रश्न 2. हीरा-मोती ने नया स्थान स्वीकार क्यों नहीं किया?

(क) उन्हें भरपेट भोजन दिया गया।

(ख) उन्हें बहुत मोटी रस्सी से बाँधा गया।

(ग) मालिक ने बेचा, यह सोचकर उन्हें अपमान लगा।

(घ) उन्हें अलग-अलग बाँधा गया।

सटीक उत्तर: (ग) मालिक ने बेचा, यह सोचकर उन्हें अपमान लगा।

- **उपयुक्तता का तर्क:** जब झूरी ने उन्हें अपने साले गया के साथ भेजा, तो बैलों को लगा कि उनके प्यारे मालिक ने उन्हें बेच दिया है। झूरी के प्रति वफादार होने के कारण उन्हें यह बेचना अपने स्वाभिमान पर चोट और अपमान जैसा लगा, इसलिए उन्होंने गया के घर को अपना नहीं माना।

प्रश्न 3. बैलों ने रस्सी तोड़कर घर लौटने का निर्णय क्यों लिया?

(क) कष्टों से बचने के लिए

(ख) स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए

(ग) अभिमान की रक्षा के लिए

(घ) अपनापन पाने के लिए

सटीक उत्तर: (घ) अपनापन पाने के लिए

- **उपयुक्तता का तर्क:** गया के घर में उन्हें नए लोग, बेगाना माहौल और रूखा व्यवहार मिला, जबकि झूरी के यहाँ उन्हें अत्यधिक स्नेह और अपनापन मिलता था। वे इसी आत्मीयता और अपनेपन को वापस पाने के लिए रस्सियाँ तोड़कर भागे।

प्रश्न 4. गया द्वारा डंडे से मारने पर मोती का आक्रोश किस मानवीय मनोवृत्ति का द्योतक है?

(क) स्वाभिमान

(ख) अहिंसा

(ग) पराधीनता

(घ) अन्याय की रक्षा

सटीक उत्तर: (क) स्वाभिमान

- **उपयुक्तता का तर्क:** जब गया ने हीरा की नाक पर क्रूरतापूर्वक डंडे बरसाए, तो मोती का आत्मसम्मान जाग उठा और उससे यह अन्याय सहन नहीं हुआ। उसका आक्रोश यह दिखाता है कि स्वाभिमानी जीव कभी भी बिना कारण और अत्यधिक अत्याचार को चुपचाप स्वीकार नहीं करते।

प्रश्न 5. कहानी में बैलों की 'मूक-भाषा' का प्रयोग लेखक ने किस लिए किया?

(क) कहानी को रोचक बनाने के लिए

(ख) मनुष्य जैसी चेतना दिखाने के लिए

(ग) संवादों को छोटा रखने के लिए

(घ) कथा में हास्य उत्पन्न करने के लिए

सटीक उत्तर: (ख) मनुष्य जैसी चेतना दिखाने के लिए

- **उपयुक्तता का तर्क:** मूक-भाषा के माध्यम से लेखक यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि पशुओं में भी मनुष्यों की तरह गहरी संवेदनाएँ, विचार-विमर्श करने की क्षमता, सुख-दुख की समझ और उच्च चेतना होती है।

प्रश्न 6. 'दो बैलों की कथा' को यदि स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ें, तो हीरा और मोती किसके प्रतीक हो सकते हैं?

(क) भारत पर अंग्रेजों के क्रूर और अन्यायपूर्ण शासन के

(ख) स्वतंत्रता संग्राम में पशुओं के योगदान के

(ग) सत्याग्रह और अहिंसा के आंदोलन के

(घ) स्वतंत्रता के लिए भारतीय जनता के संघर्ष के

सटीक उत्तर: (घ) स्वतंत्रता के लिए भारतीय जनता के संघर्ष के

- **उपयुक्तता का तर्क:** हीरा और मोती बार-बार कैद होते हैं, मार खाते हैं, लेकिन आज़ादी के लिए अपने प्रयास नहीं छोड़ते। उनका यह निरंतर जुझारूपन तत्कालीन भारतीय जनता के उस जुझारू रूप का प्रतीक है जो अंग्रेजी दासता की बेड़ियों को काटने के लिए लगातार संघर्ष कर रही थी।

मेरी समझ मेरे विचार (दीर्घ व लघु उत्तरीय प्रश्न)

प्रश्न 1. "दूसरे दिन गया ने बैलों को हल में जोता, पर इन दोनों ने जैसे पाँव न उठाने की कसम खा ली थी।" जब बैल नए मालिक के यहाँ गए, तो उन्होंने काम करने से इनकार क्यों कर दिया था?

- **उत्तर:** बैलों को अपने पुराने मालिक झूरी से अगाध स्नेह था। जब उन्हें गया के घर भेजा गया, तो वे समझ बैठे कि उन्हें बेच दिया गया है। गया का घर और वहाँ के लोग उन्हें एकदम बेगाने लगे। इसके अतिरिक्त, गया ने

उनके साथ बहुत रूखा व्यवहार किया और उन्हें खाने के लिए केवल सूखा भूसा दिया। अपने आहत सम्मान और अपनेपन की कमी के कारण बैलों ने गया के यहाँ हल में पाँव उठाने से साफ इनकार कर दिया।

प्रश्न 2. "गाँव के इतिहास में यह घटना अभूतपूर्व न होने पर भी महत्वपूर्ण थी।" बैलों का घर लौट आना कोई साधारण घटना नहीं है। कैसे?

- **उत्तर:** आमतौर पर पालतू पशु यदि एक बार दूर चले जाएँ या उन्हें कहीं भेज दिया जाए, तो वे इस तरह अकेले वापस नहीं लौट पाते। लेकिन हीरा और मोती अत्यधिक मजबूत रस्सियों को एक ही झटके में तोड़कर, बिना किसी के मार्गदर्शन के, केवल अपने घर के प्रति गहरे खिंचाव और स्नेह के कारण वापस लौट आए थे। उनकी आँखों में अपने मालिक के प्रति वफादारी और विद्रोहमय स्नेह साफ दिखाई दे रहा था। पशुओं की इस अद्भुत घर-वापसी और उनकी इस इंसानी जैसी समझ को देखकर पूरे गाँव के बच्चे और बाल-सभा भावुक हो उठे और उनका रोटियों व गुड़ से अभिनंदन किया, इसलिए यह एक असाधारण घटना थी।

प्रश्न 3. "मोती ने मूक-भाषा में कहा- अब तो नहीं सहा जाता, हीरा!" 'कभी-कभी संघर्ष करना आवश्यक हो जाता है' इस कथन को कहानी के उदाहरणों से सिद्ध कीजिए।

- **उत्तर:** कहानी से यह सिद्ध होता है कि यदि हम अत्याचार को चुपचाप सहते रहेंगे, तो अत्याचारी के हौसले और बढ़ जाते हैं। जब तक हीरा और मोती गया की लाठियाँ और सूखा भूसा चुपचाप सहते रहे, उनका शोषण होता रहा। लेकिन जब उन्होंने मिलकर साँड़ का मुकाबला किया, तो वे अपनी जान बचाने में सफल रहे। जब काँजीहौस में उन्होंने संघर्ष करके दीवार तोड़ी, तो दर्जनों बेजुबान जानवरों की जान बच सकी। अंत में, जब मोती ने कसाई को सींग दिखाकर गाँव से बाहर खदेड़ दिया, तभी कसाई उन्हें दोबारा ले जाने का साहस नहीं कर सका। इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि अपने अधिकारों और स्वाभिमान की रक्षा के लिए संघर्ष करना अत्यंत आवश्यक है।

प्रश्न 4. हीरा एवं मोती 'स्वतंत्रता' और 'अपनापन' दोनों में से किस भावना से अधिक प्रेरित थे? कारण सहित लिखिए।

- **उत्तर:** हीरा और मोती 'अपनापन' की भावना से अधिक प्रेरित थे। यद्यपि वे स्वतंत्रता के आकांक्षी थे, लेकिन जब भी वे स्वतंत्र हुए (जैसे गया के घर से भागने के बाद या काँजीहौस की दीवार टूटने के बाद), वे जंगलों या अन्य सुरक्षित स्थानों पर भागने के बजाय अंत में घूम-फिरकर झूरी के उसी थान पर वापस आए जहाँ उन्हें सच्चा स्नेह और अपनापन मिलता था। उनके लिए आज़ादी का असली अर्थ झूरी का वह घर था जहाँ उनका सम्मान था और जहाँ उन्हें प्यार से सहलाया जाता था।

प्रश्न 5. "बैलों ने जैसे पाँव न उठाने की कसम खा ली थी।" 'अत्याचार सहना भी अन्याय में भागीदारी है'- क्या आप इस कथन से सहमत हैं? अपने उत्तर के कारण भी बताइए।

- **उत्तर:** हाँ, हम इस कथन से पूर्णतः सहमत हैं। जो व्यक्ति या जीव बिना किसी विरोध के अत्याचार को सहता रहता है, वह अत्याचारी को अन्याय करने के लिए और अधिक बढ़ावा देता है। यदि हीरा और मोती शुरू से ही गया की अनुचित मार को सहते रहते, तो गया उनकी जान ही ले लेता। जब बैलों ने दृढ़ता से पाँव न उठाने

की कसम खाई और हल लेकर भागे, तभी अत्याचारी को अपनी सीमा समझ में आई। समाज में भी यदि लोग अन्याय के खिलाफ आवाज़ नहीं उठाएंगे, तो अन्याय कभी समाप्त नहीं होगा।

प्रश्न 6. "बहुत दिनों साथ रहते-रहते दोनों में भाईचारा हो गया था।" हीरा और मोती अभिन्न मित्र थे। कहानी की किन-किन घटनाओं के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है? कम से कम तीन बिंदु लिखिए।

- **उत्तर:** निम्नलिखित तीन प्रमुख घटनाओं के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है:
    1. **साथ उठना और साथ खाना:** नाँद में खली-भूसा पड़ जाने के बाद दोनों हमेशा साथ ही मुँह डालते थे और यदि एक मुँह हटा लेता, तो दूसरा भी हटा लेता था।
    2. **साँड़ से संगठित मुकाबला:** जब सामने एक भयंकर साँड़ आया, तो दोनों में से कोई भी अकेला नहीं भागा। दोनों ने मिलकर योजना बनाई और अपनी जान जोखिम में डालकर एक-दूसरे की रक्षा करते हुए साँड़ को परास्त किया।
    3. **काँजीहौस में निष्ठा:** जब मोती ने दीवार तोड़ दी और वह चाहता तो भाग सकता था, लेकिन उसने अपने मित्र हीरा को रस्सियों में बँधा देखकर अकेले भागने से साफ मना कर दिया और विपत्ति में उसका साथ निभाया।

प्रश्न 7. कहानी में मालकिन (झूरी की पत्नी) और छोटी लड़की, दोनों के व्यवहार की तुलना कीजिए।

- **उत्तर:** * **मालकिन का व्यवहार:** शुरुआत में मालकिन का व्यवहार संकीर्ण और क्रोधपूर्ण था। बैलों को द्वार पर देखकर वह जल उठी और उन्हें 'नमक-हराम' व 'कामचोर' की पदवी देकर सूखा भूसा डाल दिया। हालाँकि, कहानी के अंत में बैलों की वफादारी और घर-वापसी देखकर उसका हृदय भी पिघल जाता है और वह उनके माथे चूम लेती है।
    - **छोटी लड़की का व्यवहार:** भैरो की छोटी लड़की निश्छल, संवेदनशील और अत्यधिक दयालु थी। वह स्वयं सौतेली माँ के अत्याचार की शिकार थी, इसलिए वह बैलों की मूक पीड़ा को तुरंत समझ गई। उसने बिना किसी स्वार्थ के बैलों को रोज़ रोटियाँ खिलाईं और अंत में अपनी जान जोखिम में डालकर उन्हें आज़ाद कर दिया।

मेरी कल्पना मेरे अनुमान

प्रश्न 1. "उसने उनके माथे सहलाए और बोली- खोले देती हूँ। चुपके से भाग जाओ..." यदि आप वह छोटी लड़की होते, तो बैलों की मदद किस प्रकार करते?

- **उत्तर:** यदि मैं उस छोटी लड़की के स्थान पर होता, तो मैं भी बैलों की यह दयनीय और कष्टप्रद दशा देखकर उतनी ही सहानुभूति रखता। मैं न केवल रात के समय उनकी रस्सियाँ चुपके से खोल देता , बल्कि उनके भागने से पहले घर की रसोई से कुछ चोकर या रोटियाँ लाकर उन्हें खिलाता ताकि वे रास्ते में भूखे न रहें। इसके अतिरिक्त, मैं उन्हें पीछे के रास्ते से जाने का संकेत देता ताकि वे सीधे अपने पुराने स्नेही मालिक झूरी के घर सुरक्षित पहुँच सकें और गया के आदमियों के हाथ दोबारा न आएं।

प्रश्न 2. "दोनों गधे अभी तक ज्यों-के-त्यों खड़े थे।" भय और संकोच इंसान को अवसर मिलने पर भी जकड़े रखता है। क्या आप इस कथन से सहमत हैं? इस वाक्य के संबंध में कहानी और अपने अनुभवों से उदाहरण लेते हुए अपने विचार लिखिए।

- **उत्तर:** हाँ, मैं इस कथन से पूर्णतः सहमत हूँ। भय और संकोच मनुष्य की निर्णय लेने की क्षमता और आत्मविश्वास को कमजोर कर देते हैं, जिससे सामने आया हुआ सुनहरा अवसर भी हाथ से निकल जाता है। कहानी में जब काँजीहौस की दीवार टूट गई और सभी जानवर अपनी आज़ादी के लिए भाग रहे थे, तब गधे अपनी स्वाभाविक डरपोक प्रवृत्ति और संकोच के कारण वहीं खड़े सोच रहे थे कि "यदि दोबारा पकड़ लिए गए तो क्या होगा?" वास्तविक जीवन में भी कई बार छात्र असफलता के डर से कठिन प्रतियोगिताओं या मंच (Stage) पर आने से संकोच करते हैं। जब तक हम इस मानसिक भय को नहीं छोड़ते, तब तक हम स्वतंत्रता या सफलता प्राप्त नहीं कर सकते।

मेरे अनुभव मेरे विचार

प्रश्न 1. "दोस्तों में घनिष्ठता होते ही धौल-धप्पा होने लगता है। इसके बिना दोस्ती कुछ फुसफुसी, कुछ हल्की-सी रहती है, जिस पर ज्यादा विश्वास नहीं किया जा सकता।" क्या आप इस बात से सहमत हैं? आपको ऐसा क्यों लगता है? अपने अनुभवों के आधार पर बताइए।

- **उत्तर:** हाँ, मैं इस कथन से पूर्णतः सहमत हूँ। सच्ची और गहरी मित्रता में औपचारिकता (Formalities) के लिए कोई स्थान नहीं होता। जब मित्रों में घनिष्ठता बढ़ती है, तो वे एक-दूसरे से मज़ाक, हल्की नोक-झोंक और खेल-खेल में 'धौल-धप्पा' (हल्की हाथापाई) करने लगते हैं, जैसा हीरा और मोती विनोद के भाव से सींग मिलाकर करते थे। यह व्यवहार किसी शत्रुता या द्वेष से नहीं, बल्कि अगाध प्रेम और सहजता के कारण होता है। इसके बिना दोस्ती बहुत ऊपरी और कमजोर लगती है, जिसमें अपनी भावनाओं को खुलकर व्यक्त नहीं किया जा सकता।

प्रश्न 2. "हीरा ने तिरस्कार किया- गिरे हुए बैरी पर सींग न चलाना चाहिए।" "यह सब ढोंग है। बैरी को ऐसा मारना चाहिए कि फिर न उठे।" आपका इस संबंध में क्या विचार है? आप किसके साथ हैं- हीरा के या मोती के या दोनों के? क्यों?

- **उत्तर:** इस संबंध में, मैं वैचारिक रूप से **हीरा** के विचारों के साथ हूँ। हीरा का यह सोचना कि "गिरे हुए शत्रु पर वार नहीं करना चाहिए," उच्च नैतिक मूल्यों, मानवीय गरिमा और श्रेष्ठ युद्ध-नीति के सर्वथा अनुकूल है। शत्रु यदि असहाय या परास्त हो चुका हो, तो उस पर प्रहार करना कायरता का लक्षण है। यद्यपि व्यावहारिक धरातल पर मोती का विचार शत्रु को दोबारा सिर उठाने का मौका न देने के उद्देश्य से तात्कालिक सुरक्षा के लिए सही प्रतीत होता है, परंतु दीर्घकालिक नैतिक मर्यादाओं की रक्षा के लिए हीरा का पक्ष ही अनुकरणीय और सर्वश्रेष्ठ है।

प्रश्न 3. "हम और तुम इतने दिनों एक साथ रहे। आज तुम विपत्ति में पड़ गए तो मैं तुम्हें छोड़कर अलग हो जाऊँ?" क्या कभी आपने किसी विपत्ति या चुनौती का सामना अपने किसी मित्र या परिजन के साथ मिलकर किया है? उस घटना के विषय में बताइए।

- **उत्तर:** हाँ, हमारे विद्यालय की वार्षिक विज्ञान प्रदर्शनी (Science Exhibition) के दौरान जब हमारा मुख्य वर्किंग मॉडल अंतिम समय पर तकनीकी खराबी के कारण अचानक टूट गया था, तब मेरे सहपाठी मित्र और मैंने मिलकर उस चुनौती का सामना किया। हम दोनों ने हिम्मत नहीं हारी, पूरी रात जागकर कोडिंग और सर्किट को दोबारा सुधारा। उस कठिन समय में यदि मेरा मित्र मेरा साथ छोड़ देता, तो मैं अकेला सफल नहीं हो पाता। एक-दूसरे के सहयोग, मानसिक संबल और सूझबूझ से हमने न केवल मॉडल ठीक किया, बल्कि प्रदर्शनी में प्रथम स्थान भी प्राप्त किया।

विधा से संवाद: कहानी की पड़ताल

कहानी के मूल तत्वों और ढाँचे के आधार पर भरी गई विस्तृत तालिका निम्नलिखित है:

तत्व / बिंदु	विवरण ('दो बैलों की कथा' के आधार पर)
शीर्षक और लेखक	शीर्षक: दो बैलों की कथा, लेखक: मुंशी प्रेमचंद
विषय	कृषक समाज और पालतू पशुओं के मध्य अटूट भावनात्मक संबंध तथा पराधीनता के विरुद्ध स्वतंत्रता का संघर्ष।
परिवेश / देश-काल	तत्कालीन भारतीय ग्रामीण परिवेश और पराधीन भारत (ब्रिटिश औपनिवेशिक काल) का समय।
चरित्र / पात्र	मुख्य पात्र: हीरा और मोती (बैल) , झूरी (स्नेही मालिक) , गया (शोषक साला) , छोटी लड़की (करुणामयी अनाथ बालिका)।
मुख्य विचार	स्वतंत्रता सहज ही नहीं मिलती, उसके लिए बार-बार संगठित होकर संघर्ष करना पड़ता है; पशुओं में भी गहरी संवेदनाएं होती हैं।
परिणाम	अनेक कष्टों, प्रताड़नाओं और संघर्षों को पार करते हुए दोनों बैलों की अपने मूल स्नेही घर (झूरी के थान) पर ससम्मान सुरक्षित वापसी।

कहानी का सौंदर्य

कहानी की साहित्यिक विशेषताओं को पुष्ट करने वाले उदाहरणों की पूर्ण विवरणात्मक तालिका:

विशेषता	विशेषता का अर्थ	पाठ से उदाहरण 1	पाठ से उदाहरण 2 (नया खोजा गया)
चित्रात्मक भाषा	शब्दों के माध्यम से पाठक के मन में स्पष्ट और जीवंत चित्र या छवियाँ बनाना।	घुटने तक पाँव कीचड़ से भरे हैं।	सहसा घर का द्वार खुला और वही लड़की निकली। दोनों की पूँछें खड़ी हो गईं।

संवादात्मकता	कथ्य को आगे बढ़ाने के लिए, पात्रों के विचार, भाव आदि व्यक्त करने के लिए बातचीत और संवादों का प्रयोग।	मर जाऊँगा, पर उसके काम तो न आऊँगा।	"भागना व्यर्थ है।" मोती ने उत्तर दिया- "तुम्हारी तो इसने जान ही ले ली थी।"
विरोधाभास	एक ही प्रसंग या रचना में दो विपरीत या परस्पर विरोधी बातें एक साथ मौजूद होना।	झूरी बैलों को देखकर स्नेह से गद्गद हो गया। झूरी की स्त्री ने बैलों को द्वार पर देखा, तो जल उठी।	ऋषियों-मुनियों के जितने गुण हैं, वे सभी उसमें पराकाष्ठा को पहुँच गए हैं; पर आदमी उसे बेवकूफ कहता है।
व्यंग्य	वह शैली जिसमें मज़ाक, हास्य या कटाक्ष के माध्यम से किसी दोष, कुरीति या कमजोरी को प्रकट किया जाता है।	भारतवासियों की अफ्रीका में क्या दुर्दशा हो रही है? अगर वे भी ईंट का जवाब पत्थर से देना सीख जाते तो शायद सभ्य कहलाने लगते।	"बस, तुम्हीं तो बैलों को खिलाना जानते हो और तो सभी पानी पिला-पिलाकर रखते हैं।"
संघर्ष	दो विरोधी शक्तियों, विचारों, इच्छाओं या परिस्थितियों का आपस में टकराना।	उससे भिड़ना जान से हाथ धोना है; लेकिन न भिड़ने पर भी जान बचती नहीं नजर आती। (बैल बनाम साँड़)	गया को घर तक गोई ले जाने में दाँतों पसीना आ गया। पीछे से हाँकता तो दोनों दाएँ-बाएँ भागते।
अतिशयोक्ति	किसी पात्र, घटना, भाव या वस्तु का वर्णन इतना बढ़ाकर करना कि वह असंभव या अविश्वसनीय लगे।	झूरी इन्हें फूल की छड़ी से भी न छूता था। उसकी टिटकार पर दोनों उड़ने लगते थे।	पगहे बहुत मजबूत थे। अनुमान न हो सकता था कि कोई बैल उन्हें तोड़ सकेगा; पर इन दोनों में इस समय दूनी शक्ति आ गई थी।
संदेह / उलझन	जब पात्र किसी निर्णय पर नहीं पहुँच पाता या असमंजस में रहता है।	सारा दिन बीत गया और खाने को एक तिनका भी न मिला। समझ ही में न आता था, यह कैसा स्वामी है?	बैलों को क्या मालूम, वे क्यों भेजे जा रहे हैं। समझे, मालिक ने हमें बेच दिया। अपना यों बेचा जाना उन्हें अच्छा लगा या बुरा, कौन जाने!

कहानी की रचना

प्रश्न. प्राय: कहानी के प्रारंभ में ही कहानी के मुख्य चरित्र, कहानी का समय, कहानी की भाषा, घटनाओं आदि के कुछ संकेत मिलने लगते हैं। प्रेमचंद की इस कहानी में भी ऐसे संकेत हैं। आप कहानी के ऐसे संकेत/ बिंदुओं को ढूँढ़कर लिखिए।

- **उत्तर:** कहानी के प्रारंभिक पृष्ठों में ही मुंशी प्रेमचंद जी ने निम्नलिखित महत्वपूर्ण संकेत बड़ी कुशलता से दिए हैं:
    1. **चरित्र और स्वभाव का संकेत:** गधे के सीधेपन और सहनशीलता की दार्शनिक विवेचना के तुरंत बाद , लेखक ने बैल को 'बछिया का ताऊ' कहकर उसके अड़ियल स्वभाव का संकेत दिया है , जो आगे चलकर हीरा-मोती के विद्रोही रूप में प्रकट होता है।
    2. **समय और सामाजिक परिवेश का संकेत:** अफ्रीका और अमेरिका में भारतीयों की दुर्दशा तथा जापान की मिसाल के माध्यम से लेखक ने परोक्ष रूप से तत्कालीन परतंत्र भारत (अंग्रेजी शासन का काल) और पराधीनता के कष्टों को रेखांकित कर दिया है।
    3. **घटनाक्रम का संकेत:** "कदाचित सीधापन संसार के लिए उपयुक्त नहीं है" —यह विशिष्ट वाक्य यह स्पष्ट संकेत देता है कि आगे कहानी में इन सीधे-साधे और चौकस बैलों के साथ घोर अन्याय होने वाला है , जिससे मुक्ति के लिए उन्हें संघर्ष करना ही होगा।

<u>विषयों से संवाद: कहानी का समय और समाज</u>

कहानी के वाक्यों का स्वतंत्रता आंदोलन की ऐतिहासिक चेतना के साथ सटीक मिलान:

1. **"नोर तो मारता ही जाऊँगा, चाहे कितने ही बंधन पड़ते जाएँ।"**
    (6) स्वतंत्रता सेनानी बार-बार जेल गए, फाँसी पर चढ़े, पर संघर्ष छोड़ने को तैयार नहीं हुए।
2. **"मर जाऊँगा, पर उसके काम तो न आऊँगा।"**
    (5) स्वतंत्रता के लिए प्राण देना स्वीकार्य था, पर अंग्रेजों की सेवा में लगना अस्वीकार्य।
3. **"हमारी जान को कोई जान ही नहीं समझता।"**
    (4) दासता के काल में भारतीयों के प्राण, सम्मान और अधिकारों की कोई महत्ता नहीं थी।
4. **"दोनों मित्रों की आँखों में, रोम-रोम में विद्रोह भरा हुआ था।"**
    (2) भारतीय जनता के मन में ब्रिटिश शासन के प्रति विद्रोह धीरे-धीरे गहराता गया।
5. **"इतना तो हो ही गया कि नौ-दस प्राणियों की जान बच गई। वे सब तो आशीर्वाद देंगे।"**
    (1) भगत सिंह और चंद्रशेखर आजाद जैसे क्रांतिकारियों ने बलिदान दिया, जिससे लाखों भारतीयों में आजादी की प्रेरणा जगी।
6. **"साँड़ पूरा हाथी है... पर दोनों मित्र जान हथेलियों पर लेकर लपके।"**
    (3) ब्रिटिश साम्राज्य बहुत शक्तिशाली था, फिर भी स्वतंत्रता सेनानियों ने साहसपूर्वक उसका सामना किया।

<u>पशुओं के लिए कानून</u>

प्रश्न 1. बैलों का काँजीहाउस में बंद होना न्याय और अन्याय दोनों को दर्शाता है। कैसे?

- **उत्तर:** काँजीहौस की यह घटना न्याय और अन्याय के दो अलग-अलग पहलुओं को उद्घाटित करती है:

- **न्याय का पक्ष (कानूनी दृष्टिकोण):** जब लावारिस या अनियंत्रित पशु किसी अन्य किसान के सींचे हुए खेत में घुसकर फसल को नष्ट करते हैं (जैसे मोती मटर चर रहा था) , तो पीड़ित किसान की आर्थिक सुरक्षा के लिए उन पशुओं को पकड़कर काँजीहौस में बंद करना कानूनी रूप से न्यायसंगत है।
- **अन्याय का पक्ष (अमानवीय दृष्टिकोण):** बाड़े के भीतर बंद बेज़ुबान जानवरों को कई दिनों तक खाने के लिए चारे का एक तिनका भी न देना , उन्हें केवल पानी दिखाकर जीवित रखना , उनकी ठठरियाँ निकल आने पर भी उन पर डंडे बरसाना और अंत में कसाई को बेच देना घोर अन्याय और अमानवीयता है।

प्रश्न 2. यदि आपको अवसर मिले तो आप बैलों की ओर से कौन-कौन से कानूनी अधिकार माँगेंगे?

- **उत्तर:** मैं मूक पशुओं की सुरक्षा के लिए निम्नलिखित वैधानिक अधिकारों की माँग करूँगा:
  1. **अनिवार्य पोषण और चिकित्सा का अधिकार:** सरकारी या निजी बाड़ों में बंद पशुओं को प्रतिदिन मानक के अनुसार पर्याप्त हरा चारा, साफ पानी और बीमार होने पर पशु चिकित्सक की सुविधा अनिवार्य रूप से मिले।
  2. **शारीरिक उत्पीड़न से मुक्ति का अधिकार:** पशुओं को बेरहमी से लाठियों से पीटने, उनके अंगों को क्षतिग्रस्त करने या उनकी नाक में दर्दनाक 'नाथ' डालने जैसे कृत्यों को संज्ञेय अपराध की श्रेणी में रखा जाए।
  3. **श्रम सीमा निर्धारण का अधिकार:** कृषि या व्यावसायिक कार्यों में पशुओं से लगातार काम लेने के घंटे तय हों और अत्यधिक धूप या बीमारी की स्थिति में उनसे जबरन काम कराने पर पूर्ण प्रतिबंध हो।

हमारी धरोहर और संस्कृति

प्रश्न 1. "वह अपना धर्म छोड़ दे लेकिन हम अपना धर्म क्यों छोड़ें!" कहानी के अनुसार हीरा और मोती सदैव ध्यान रखते थे कि कौन-से कार्य करने योग्य हैं और कौन-से नहीं। वे कौन-कौन से कार्य कभी नहीं करते थे?

- **उत्तर:** हीरा और मोती अत्यधिक कष्टों में रहने के बावजूद अपने नैतिक और सांस्कृतिक धर्म पर अडिग रहते थे। वे निम्नलिखित निषिद्ध कार्य कभी नहीं करते थे:
  1. वे अपने रक्षक या स्नेही पालक (झूरी) के प्रति कभी भी विश्वासघात या नमक-हरामी की भावना नहीं रखते थे।
  2. वे युद्ध के मैदान में पूर्णतः परास्त, असहाय या गिरे हुए दुश्मन (जैसे घायल होकर गिरा हुआ साँड़) पर दोबारा कभी सींग नहीं चलाते थे।
  3. वे स्त्री जाति पर कभी भी सींग नहीं चलाते थे, क्योंकि उनके संस्कारों में 'औरत जात' पर प्रहार करना सर्वथा वर्जित था।

प्रश्न 2. "गिरे हुए बैरी पर सींग न चलाना चाहिए।" "लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है, यह भूले जाते हो।" हीरा के ये कथन किन भारतीय मूल्यों की ओर संकेत करते हैं?

- **उत्तर:** हीरा के ये अमूल्य कथन महान सनातन भारतीय जीवन-मूल्यों और आदर्शों की ओर संकेत करते हैं:

- **नारी सम्मान का मूल्य:** समाज में स्त्रियों को आदरणीय स्थान देना, उन पर किसी भी परिस्थिति में शारीरिक बल या मानसिक हिंसा का प्रयोग न करना, जो कि "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते" की भावना को पुष्ट करता है।
- **युद्ध मर्यादा और वीरता का मूल्य:** शरणागत की रक्षा करना और निहत्थे, असहाय या पराजित शत्रु को जीवनदान देना भारतीय वीरों का परम धर्म रहा है।

प्रश्न 3 (क). खेतों में जुताई के लिए बैल और हल कृषि के पारंपरिक उपकरण हैं। कृषि के अन्य पारंपरिक और आधुनिक उपकरणों तथा उनके उपयोग के विषय में पता लगाइए और लिखिए।

- **उत्तर:** * **पारंपरिक उपकरण:** *हल-बैल* (भूमि की प्राथमिक जुताई के लिए) , *दरांती या हँसिया* (फसल की कटाई के लिए), *फावड़ा और कुदाल* (मिट्टी पलटने और नालियाँ बनाने के लिए), *पुर या रहट* (कुएँ से सिंचाई के लिए पानी निकालने हेतु)।
  - **आधुनिक उपकरण:** *ट्रैक्टर* (तीव्र गति से जुताई और परिवहन के लिए), *कंबाइन हार्वेस्टर* (फसल काटने, मड़ने और अनाज साफ करने के लिए एक साथ), *ट्यूबवेल और ड्रिप इरिगेशन* (वैज्ञानिक सिंचाई प्रणाली), *सीड ड्रिल* (समान दूरी पर व्यवस्थित रूप से बीज बोने के लिए)।

प्रश्न 3 (ख). भारत में बैल केवल पशु नहीं बल्कि कृषि संस्कृति का अभिन्न अंग हैं। लिखिए कि भारतीय गाँवों एवं शहरों में भी बैल किस-किस काम में सहायक होते हैं?

- **उत्तर:**
  - **गाँवों में उपयोगिता:** खेतों की जुताई करने में, पकी हुई फसल की मड़ाई (भूसे से अनाज अलग करने) में, बैलगाड़ी के माध्यम से भारी कृषि उपज को ग्रामीण हाट-बाज़ार तक पहुँचाने में तथा कोल्हू चलाकर तेल या गुड़ निकालने में।
  - **शहरों में उपयोगिता:** कस्बों और अर्ध-शहरी क्षेत्रों के संकरे रास्तों पर भारी माल-सामान ढोने वाली मालगाड़ियों (लग्गड़) को खींचने में तथा पारंपरिक सांस्कृतिक-धार्मिक मेलों, रथयात्राओं और त्योहारों (जैसे पोंगल या पोला) की शोभा बढ़ाने में।

अलग-अलग और साथ-साथ

प्रश्न 1. कहानी के आधार पर हीरा और मोती की विशेषताएँ लिखिए।

- **उत्तर:** पाठ के आधार पर दोनों मित्रों का चरित्र-चित्रण इस प्रकार है:
  - **हीरा:** शांत स्वभाव का, अत्यधिक सहनशील, गंभीर, विवेकवान, विपत्ति में धैर्य से काम लेने वाला और नैतिक मर्यादाओं (जैसे नीति, क्षमा और नारी-सम्मान) पर दृढ़ता से टिकने वाला बैल।
  - **मोती:** स्वभाव से थोड़ा उग्र और गुस्सैल, तत्काल अन्याय का कड़ा विरोध करने वाला, उत्साही, व्यावहारिक और संकट के समय अत्यधिक पराक्रमी व साहसी।

प्रश्न 2. हीरा और मोती की विशेषताएँ कुछ-कुछ समान और कुछ-कुछ अलग हैं, किंतु उनकी भिन्न विशेषताएँ एक-दूसरे को पूरा करती हैं। कैसे?

- **उत्तर:** हीरा और मोती का चरित्र एक-दूसरे का 'पूरक' है। जहाँ मोती उग्र और भावुक होकर बिना परिणाम सोचे कोई विद्रोही कदम उठा लेता है (जैसे गया के घर हल-जुआ तोड़ना या कसाई पर सींग चलाना) , वहाँ हीरा अपनी सहनशीलता और शांत समझदारी से उसे शांत कर लेता है। इसके विपरीत, जब हीरा अत्यधिक सीधेपन के कारण संकट में फँस जाता है, तो मोती अपने बाहुबल और रणनीतिक पराक्रम से उनकी रक्षा करता है (जैसे भयानक साँड़ से संयुक्त रूप से लड़ना)। एक का विवेक और दूसरे का साहस मिलकर ही हर विपत्ति को परास्त कर पाता है।

प्रश्न 3. आपकी कक्षा में भी कुछ-कुछ समान और कुछ-कुछ भिन्न विशेषताओं वाले सहपाठी हैं। सबकी आवश्यकताएँ भी थोड़ी समान और थोड़ी भिन्न हैं। बताइए कि आप भिन्न विशेषताओं वाले सहपाठी से अपने लिए कैसा व्यवहार चाहते हैं? उनसे पता कीजिए कि वे आपसे अपने लिए कैसा व्यवहार चाहते हैं?

- **उत्तर:** मैं अपनी कक्षा के भिन्न विशेषताओं वाले सहपाठियों से यह अपेक्षा रखता हूँ कि वे मेरी कमियों का उपहास न उड़ाकर, अपने विशिष्ट गुणों से मेरी सहायता करें (जैसे यदि कोई सहपाठी गणित में कुशल है, तो वह मुझे कठिन सवाल समझने में मदद करे)। बदले में, वे भी मुझसे यही चाहते हैं कि जब वे किसी विषय या खेल में कठिनाई महसूस करें, तो मैं बिना किसी अहंकार के उनका साथ दूँ। हमें एक-दूसरे की भिन्नताओं का सम्मान करते हुए कक्षा में स्नेह, सहयोग और समानता का व्यवहार करना चाहिए।

प्रश्न 4. "दोनों आमने-सामने या आस-पास बैठे हुए एक-दूसरे से मूक-भाषा में विचार-विनिमय करते थे।" कहानी में अनेक स्थानों पर 'मूक-भाषा' का उल्लेख किया गया है। आपके विचार से हीरा और मोती किस प्रकार आपस में बातें किया करते होंगे? अनुमान और कल्पना से बताइए।

- **उत्तर:** मेरे विचार से हीरा और मोती बिना किसी बाहरी ध्वनि के, अपनी आँखों के गहरे स्नेहपूर्ण या क्रोधित संकेतों, चेहरे के हाव-भाव, कानों को विशेष दिशा में हिलाने और अपनी पूँछ की तीव्र हरकतों से आपस में अद्भुत संवाद करते होंगे। जब वे गहरी चिंता में होते थे, तो ठंडी सांसें भरकर या एक-दूसरे को सूँघकर और चाटकर अपनी सांत्वना और आत्मीयता प्रकट कर लेते होंगे।

प्रश्न 5. आप भी अनेक अवसरों पर बिना शब्दों का उच्चारण किए संवाद करते हैं। कब-कब? कहाँ-कहाँ? कुछ उदाहरण लिखिए।

- **उत्तर:** हम दैनिक जीवन में कई विशिष्ट स्थानों पर अमौखिक (Non-verbal) संवाद का प्रयोग करते हैं:
    1. **कक्षा में शिक्षण के दौरान:** शिक्षक के पढ़ाते समय अपने मित्र से पेन या कोई वस्तु माँगने के लिए केवल हाथ का इशारा करना या पलकें झकाना।
    2. **खेल के मैदान में (जैसे क्रिकेट या फुटबॉल):** रन लेने या गेंद पास करने के लिए आवाज़ लगाने के बजाय केवल सिर हिलाकर या हाथ उठाकर साथी खिलाड़ी को सहमति देना।

3. **पुस्तकालय (Library) या शांत क्षेत्रों में:** किसी को अपने पास बुलाने के लिए केवल उंगली से संकेत करना और मुँह पर उंगली रखकर शांत रहने का इशारा करना।

मार्ग खोजेंगे कैसे?

प्रश्न 1. हीरा-मोती अपने घर के मार्ग से भटक गए थे। क्या कभी आपके साथ ऐसा हुआ है कि आप रास्ता भूल गए या भटक गए? तब आपने अपने मार्ग का पता कैसे लगाया था?

- **उत्तर:** हाँ, एक बार एक बड़े क्षेत्रीय पुस्तक मेले में अत्यधिक भीड़ होने के कारण मैं अपने परिवार से बिछड़ गया था और बाहर जाने का मार्ग भूल गया था। उस समय घबराने के बजाय मैंने सूझबूझ दिखाई और मेले के मुख्य 'सूचना और सहायता केंद्र' (Information Desk) पर जाकर वहाँ तैनात सुरक्षा अधिकारी को अपने पिताजी का मोबाइल नंबर बताया। उन्होंने लाउडस्पीकर पर त्वरित घोषणा की, जिससे मेरे माता-पिता तुरंत वहाँ पहुँच गए और मैं सुरक्षित उन तक लौट सका।

प्रश्न 2. यदि कोई व्यक्ति भटक जाए तो उसे क्या करना चाहिए कि वह सुरक्षित रूप से अपने गंतव्य तक पहुँच जाए। कक्षा में चर्चा कीजिए और लिखिए।

- **उत्तर:** यदि कोई व्यक्ति अपरिचित स्थान पर मार्ग भटक जाए, तो उसे सुरक्षित गंतव्य तक पहुँचने के लिए निम्नलिखित व्यावहारिक उपाय करने चाहिए:
    1. अपने स्मार्टफोन में उपलब्ध *ऑनलाइन डिजिटल मानचित्र (Google Maps)* की सहायता से अपनी वर्तमान लोकेशन और गंतव्य का मार्ग खोजना चाहिए।
    2. यदि तकनीक पास न हो, तो किसी स्थानीय प्रतिष्ठित दुकान, तैनात *पुलिसकर्मी, डाकघर, स्कूल या सरकारी भवन* में जाकर सही और प्रामाणिक रास्ता पूछना चाहिए।
    3. मार्ग में लगे *सूचना-पट (Signboards)* या मुख्य चौराहों पर लगे दिशा-सूचक बोर्डों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिशा का निर्धारण करना चाहिए।

सृजन (Creative Writing)

1. हीरा और मोती की दैनंदिनी

प्रश्न: कल्पना कीजिए कि हीरा या मोती लिख-पढ़ भी सकते हैं। हीरा या मोती की नज़र से उस दिन की डायरी लिखिए जब उन्हें काँजीहाउस ले जाया गया।

(नियम: "आज का दिन..." से आरंभ करें, भूख, गुस्सा, दर्द जैसी भावनाएँ लिखें और अंत में आशा या संकल्प लिखें)

मोती की डायरी

आज का दिन हमारे जीवन का सबसे कष्टदायी और दुर्भाग्यपूर्ण दिन है। आज हमें पकड़कर इस अंधकारमय काँजीहाउस में बंद कर दिया गया है। यहाँ चारों ओर अजीब सा सन्नाटा और बेबसी है। सुबह से हमारी पीठ और गरदन पर रखवालों के डंडों का असहनीय दर्द है। उस पर से सितम यह कि सारा दिन बीत गया, लेकिन इस क्रूर स्वामी ने खाने को सूखा तिनका तक नहीं दिया! भूख के मारे पेट में आग लगी है और प्यास से कंठ सूखा जा रहा है। हीरा

को बेदम और थका हुआ देखकर मेरा गुस्सा सातवें आसमान पर है, मन करता है कि इस बाड़े के रखवालों को अपनी सींगों पर उठाकर दूर फेंक दूँ!
लेकिन, मैं इस विपत्ति में हिम्मत नहीं हारूँगा। मुझे पूरा विश्वास है कि हमारा स्नेही स्वामी झूरी हमें यहाँ इस हाल में कभी नहीं छोड़ेगा, वह हमें वापस लेने अवश्य आएगा। यदि वह न भी आ पाया, तो हम स्वयं इस कैद से आज़ाद होने का कोई-न-कोई मार्ग अवश्य खोज निकालेंगे। हम अपना हौसला टूटने नहीं देंगे!

2. आज के समाचार

प्रश्न: मान लीजिए आप एक स्थानीय समाचार पत्र के संवाददाता हैं। अपने समाचार पत्र के लिए बैलों के काँजीहाउस से भागने का समाचार लिखिए।
(नियम: उचित शीर्षक दें, घटना का विवरण (कहाँ, कब, क्या हुआ) तथा परिणाम और लोगों की प्रतिक्रिया शामिल करें)

स्थानीय समाचार-पत्र (लमही ब्यूरो)

शीर्षक: दो बहादुर बैलों ने तोड़ी बेड़ियाँ, काँजीहौस से नौ पशु फरार

लमही, 24 मई 2026 : कल देर रात स्थानीय मवेशीखाने (काँजीहौस) में एक सनसनीखेज और अभूतपूर्व घटना घटित हुई। काँजीहौस के चौकीदार के अनुसार, हाल ही में मटर के खेत से पकड़कर लाए गए पछाईं नस्ल के दो नए बैलों ने अपनी शारीरिक शक्ति का असाधारण प्रदर्शन किया। बैलों ने अपने नुकीले सींगों के प्रहार से काँजीहौस की कच्ची मिट्टी की मजबूत दीवार को पूरी तरह ध्वस्त कर दिया।

घटना का परिणाम: दीवार टूटते ही बाड़े में कैद तीन घोड़ियाँ, कई बकरियाँ और भैंसें तुरंत वहाँ से आज़ाद होकर भाग निकलीं। हैरान करने वाली बात यह रही कि रस्सियों से बंधे होने के कारण वे दोनों बैल स्वयं नहीं भाग सके और वहीं मुस्तैद खड़े रहे। सुबह होते ही मवेशीखाने के कर्मचारियों में भारी खलबली मच गई।

जन-प्रतिक्रिया: इस घटना को लेकर स्थानीय ग्रामीणों और बाल-सभा के बच्चों में भारी कौतूहल है। लोग बैलों की इस अद्भुत सांगठनिक सूझबूझ और अन्य बेज़ुबान प्राणियों को आज़ाद कराने की भावना की जमकर प्रशंसा कर रहे हैं। ग्रामीणों का कहना है कि इन पशुओं ने मनुष्यों को भी एकता का पाठ पढ़ा दिया है।

3. कहानी का नया अंत

प्रश्न: यदि बैल वापस न लौटते तो कहानी का अंत कैसे होता? अपनी कल्पना से कहानी का नया अंत लिखिए।

- **बैलों की नई स्थिति:** काँजीहौस से नीलाम होने के बाद यदि हीरा और मोती बधिक के चंगुल से भागकर रास्ता न खोज पाते, तो वे कसाई को चकमा देकर किसी दूरस्थ पहाड़ी अंचल या किसी अन्य प्रांत के घने जंगलों की ओर भाग जाते. वहाँ उन्हें एक अत्यंत निर्धन, वृद्ध और दयालु किसान मिलता, जिसके पास खेती के लिए कोई साधन नहीं था. वह बूढ़ा किसान हीरा और मोती को भगवान का आशीर्वाद मानकर अपने घर ले जाता, उन्हें प्रेम से सहलाता और भरपेट हरा चारा खिलाता. हीरा और मोती उस बूढ़े किसान के छोटे से खेत में शांति और स्वाभिमान के साथ आनंदपूर्वक रहने लगते.
- **झूरी की स्थिति:** दूसरी ओर, लमही गाँव में झूरी का घर सूना हो जाता. झूरी रोज़ सुबह उठकर अपनी खाली चरनी (थान) को देखता और उसकी आँखों से अपने प्रिय हीरा-मोती की याद में आँसू बहने लगते. वह बैलों

के वियोग में उदास रहने लगता और खेती-बाड़ी से उसका मन उचट जाता. झूरी की पत्नी को भी अपनी पूर्व निष्ठुरता और बैलों को सूखा भूसा देने के निर्णय पर गहरा पश्चाताप होता और वह अपनी गलती पर रोती.

4. चित्रकथा लेखन (पृष्ठ 24)

प्रश्न: नीचे 'दो बैलों की कथा' की एक घटना को चित्रकथा के रूप में दर्शाने के लिए संकेत दिए गए हैं। प्रत्येक दृश्य के लिए घटनाक्रम बताने वाले वाक्य और संवाद लिखिए।

- दृश्य 1: बंद करना (काँजीहौस में कैद)
    - *घटनाक्रम:* मटर के खेत से पकड़े जाने के बाद रखवाले हीरा और मोती को ले जाकर मवेशीखाने (काँजीहौस) की कच्ची और तंग दीवार वाले बाड़े में बंद कर देते हैं, जहाँ पहले से ही कई भूखे पशु पड़े हैं.
    - *संवाद (मोती):* "यह कैसा निर्दयी स्वामी है! इससे तो गया ही अच्छा था, जिसने यहाँ मरने के लिए बिना चारे के बंद कर दिया."
- दृश्य 2: भागने की योजना (मूक मंत्रणा)
    - *घटनाक्रम:* रात के समय भूख से व्याकुल होकर हीरा के दिल में विद्रोह की ज्वाला दहकती है और वह अपने नुकीले सींगों से कच्ची दीवार को तोड़ने की योजना मोती के सामने रखता है.
    - *संवाद (हीरा):* "अब चुपचाप बैठना कायरता होगी भाई! आओ, अपनी पूरी ताकत से इस कच्ची दीवार को तोड़कर भागने का उपाय निकालें."
- दृश्य 3: दीवार तोड़ना (साहस का प्रदर्शन)
    - *घटनाक्रम:* चौकीदार से डंडे खाने और मोटी रस्सी से बंधने के बावजूद हीरा दीवार पर चोटें करता है और उसका हौसला देखकर मोती भी अपनी सींगों से पूरी ताकत लगाकर आधी दीवार गिरा देता है.
    - *संवाद (मोती):* "लो हीरा भाई! मैंने भी अपनी पूरी ताकत लगा दी है, देखो आधी दीवार नीचे गिर गई है!"
- दृश्य 4: आजादी (बेज़ुबान प्राणियों की मुक्ति)
    - *घटनाक्रम:* दीवार गिरते ही बाड़े में बंद तीन घोड़ियाँ, बकरियाँ और भैंसें सरपट भाग निकलती हैं और मोती गधों को भी सींग मार-मारकर बाहर भगा देता है.
    - *संवाद (सभी मुक्त पशु):* "अब हम सब इंसानी क्रूरता से आज़ाद हैं, तुम दोनों पशु-वीरों को हमारा कोटि-कोटि धन्यवाद!"

भाषा से संवाद

मेरे शब्द

प्रश्न: कहानी में से पाँच ऐसे शब्द चुनकर लिखिए जो आपके लिए बिल्कुल नए हैं। उनके अनुमानित अर्थ और शब्दकोश के प्रामाणिक अर्थ लिखिए।

क्रम	पाठ से चयनित नवीन शब्द	छात्र का अनुमानित अर्थ (Contextual Guess)	शब्दकोश के अनुसार प्रामाणिक अर्थ (Dictionary Meaning)
1	**निरापद**	बिना किसी परेशानी के	आपत्ति से रहित, सर्वथा सुरक्षित, निर्विघ्न
2	**साबिका**	किसी से पाला पड़ना	सरोकार, वास्ता, काम पड़ना
3	**विग्रह**	आपस की लड़ाई या झगड़ा	अलगाना, फूट पैदा करना, वैमनस्य, खंड
4	**अख़्तियार**	अपनी मर्जी या शक्ति	अधिकार, वश, चयन की स्वतंत्रता, विचाराधिकार
5	**उजड्डपन**	शरारत या बदमाशी करना	अशिष्टता, उदंडता, उच्छृंखलता, गँवारूपन

भाषा गढ़ते मुहावरे

प्रश्न: कहानी में से चुनकर कुछ वाक्य नीचे दिए गए हैं। इन वाक्यों में मुहावरों को पहचानकर रेखांकित (यहाँ मोटे अक्षरों में) कीजिए। इन मुहावरों का अर्थ लिखकर नए वाक्य बनाइए:

1. वाक्य: "झूरी के साले गया को घर तक गोईं ले जाने में **दाँतों पसीना आ गया**।"
   - **पहचाना गया मुहावरा:** दाँतों पसीना आना
   - **अर्थ:** अत्यधिक कठिन परिश्रम करना / बहुत अधिक परेशान होना।
   - **नया वाक्य प्रयोग:** "पहाड़ की सीधी और संकरी चढ़ाई पर भारी सामान लेकर चढ़ने में अच्छे-अच्छे ट्रैकर्स को *दाँतों पसीना आ गया*।"

2. वाक्य: "उसका चेहरा देखकर अंतर्ज्ञान से दोनों मित्रों के **दिल काँप उठे**।"
   - **पहचाना गया मुहावरा:** दिल काँप उठना
   - **अर्थ:** अत्यधिक भयभीत हो जाना / डर से दहल जाना।
   - **नया वाक्य प्रयोग:** "अंधेरी रात में अचानक अपने ठीक सामने जंगली तेंदुए को देखकर चरवाहे का *दिल काँप उठा*।"

3. वाक्य: "झूरी की स्त्री ने बैलों को द्वार पर देखा, तो **जल उठी**।"
   - **पहचाना गया मुहावरा:** जल उठना
   - **अर्थ:** बहुत अधिक क्रोधित होना / ईर्ष्या से भर जाना।
   - **नया वाक्य प्रयोग:** "बिना बताए छोटे भाई को अपनी नई साइकिल चलाते देख सोहन गुस्से से *जल उठा*।"

4. वाक्य: "मोती **दिल में ऐंठकर रह गया**।"

- **पहचाना गया मुहावरा:** दिल में ऐंठकर रह जाना
- **अर्थ:** विवशता के कारण अपने क्रोध को मन में ही दबा लेना।
- **नया वाक्य प्रयोग:** "अधिकारी द्वारा बिना गलती के डांटे जाने पर स्वाभिमानी क्लर्क *दिल में ऐंठकर रह गया*।"

5. वाक्य: "आएगा तो दूर ही से **खबर लूँगा**। देखें कैसे ले जाता है।"

- **पहचाना गया मुहावरा:** खबर लेना
- **अर्थ:** सबक सिखाना / दंड देना या डाँटना।
- **नया वाक्य प्रयोग:** "पिताजी ने कहा कि इस बार परीक्षा में कम अंक आने पर वे रोहन की अच्छी *खबर लेंगे*।"

6. वाक्य: "**जी तोड़कर काम करते हैं**, किसी से लड़ाई-झगड़ा नहीं करते, चार बातें सुनकर **गम खा जाते हैं**।" (नोट: इस वाक्य में दो मुख्य मुहावरे प्रयुक्त हुए हैं)

- **(अ) मुहावरा:** जी तोड़कर काम करना
  - **अर्थ:** अपनी पूरी शक्ति लगाकर अत्यधिक मेहनत करना।
  - **नया वाक्य प्रयोग:** "बोर्ड परीक्षा में प्रथम स्थान पाने के लिए अंजलि दिन-रात *जी तोड़कर काम कर रही है*।"
- **(ब) मुहावरा:** गम खा जाना
  - **अर्थ:** परिस्थिति को देखकर चुप रह जाना / बर्दाश्त कर लेना।
  - **नया वाक्य प्रयोग:** "सामने बलवान शत्रु को देखकर बुद्धिमान व्यक्ति लड़ने के बजाय *गम खा जाना* ही बेहतर समझता है।"

7. वाक्य: "अगर वे भी **ईंट का जवाब पत्थर से देना** सीख जाते, तो शायद सभ्य कहलाने लगते।"

- **पहचाना गया मुहावरा:** ईंट का जवाब पत्थर से देना
- **अर्थ:** किसी के अन्याय या प्रहार का करारा और आक्रामक जवाब देना।
- **नया वाक्य प्रयोग:** "करगिल युद्ध में भारतीय जाँबाज़ सैनिकों ने दुश्मनों को *ईंट का जवाब पत्थर से दिया*।"

8. वाक्य: "तो फिर वहीं मरो। बंदा तो **नौ-दो ग्यारह होता है**।"

- **पहचाना गया मुहावरा:** नौ-दो ग्यारह होना
- **अर्थ:** आँखों के सामने से तेज़ी से भाग जाना / चंपत हो जाना।
- **नया वाक्य प्रयोग:** "खेत की मेड़ पर मकान मालिक की आवाज़ सुनते ही मटर चुरा रहे बच्चे वहाँ से *नौ-दो ग्यारह हो गए*।"

गतिविधियाँ (Activities)

1. कविता (गीत) और अभिनंदन-पत्र (पृष्ठ 26)

(क) बाल-सभा द्वारा हीरा और मोती की प्रशंसा में रचित विशेष शौर्य गीत

गीत का शीर्षक: "धन्य वीर दो बैल निराले"

तोड़ के बंधन, छोड़ के खूँटा, अपनी धुन में भागे।
गया की क्रूर लाठियों के आगे, जिनका साहस जागे॥
धन्य वीर दो बैल निराले, हीरा-मोती नाम हमारे।
सम्मुख आया पर्वत-सा साँड़, पल में उसको धूल चटाई।
संकट में तज कर स्वार्थ को, दोनों ने निभाई सच्ची यारी भाई॥
काँजीहौस की जेल तोड़कर, सोतों को जिसने जगाया।
खुद बंधकर भी औरों को, आज़ादी का मार्ग दिखाया॥
लौट आए अपने आँगन में, भूल के अपनी सब कमजोरी।
झूरी की चरनी के तारे, तुम सा वीर न जग में कोई॥

(ख) बाल-सभा द्वारा हीरा-मोती को समर्पित औपचारिक 'अभिनंदन-पत्र'

अभिनंदन-पत्र

परम प्रतापी, नीतिवान एवं राष्ट्र-रत्न पशु-वीर, श्रीमान हीरा एवं श्रीमान मोती पछाईं

आदरणीय पशु-वीर द्वय,

लमही गाँव की समस्त 'बाल-सभा' अत्यंत हर्ष और गौरव के साथ आपको यह अभिनंदन-पत्र भेंट करती है. आपने पराधीनता की बेड़ियों को अपनी शारीरिक और आत्मिक शक्ति से छिन्न-भिन्न करके यह सिद्ध कर दिया है कि स्वतंत्रता किसी भी जीव का जन्मसिद्ध अधिकार है.

गया के घर में क्रूर प्रताड़ना सहते हुए स्वाभिमान की रक्षा करना, भीषण साँड़ को अपनी अद्भुत सांगठनिक एकता से परास्त करना और काँजीहौस की कच्ची दीवार को तोड़कर नौ-दस मूक बेज़ुबान प्राणियों की जान बचाना आपके अदम्य साहस, अनुपम त्याग और गहरी मित्रता का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है. आपकी यह वीरगाथा भावी पीढ़ियों को अन्याय के विरुद्ध सामूहिक संघर्ष करने की निरंतर प्रेरणा देती रहेगी.

हम आपके दीर्घायु, उत्तम स्वास्थ्य और झूरी की चरनी पर स्थायी सुखद निवास की कामना करते हैं.

सस्नेह

कृतज्ञ, *समस्त सदस्य, बाल-सभा*
ग्राम: लमही

2. बाल-सभा में भाषण

विषय: 'पशुओं के अधिकार और हमारी संवेदनशीलता'

मंच संचालन आदरणीय अध्यक्ष महोदय, शिक्षकगण और मेरे प्यारे सहपाठियों,

आज हमारी बाल-सभा में हीरा और मोती की सकुशल और गौरवपूर्ण घर वापसी पर जहाँ पूरा गाँव उत्सव मना रहा है, वहीं मैं आप सभी के समक्ष एक अत्यंत गंभीर विषय **'पशुओं के अधिकार'** पर अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए उपस्थित हुआ हूँ.

मित्रों, मुंशी प्रेमचंद जी की इस अमर कहानी 'दो बैलों की कथा' ने आज हमारी आँखें खोल दी हैं. हम अक्सर सोचते हैं कि पशु बेज़ुबान हैं, जड़ हैं, उन्हें दर्द या अपमान का अहसास नहीं होता. परंतु हीरा और मोती ने हमें सिखाया कि पशुओं में भी मनुष्यों जैसी ही तीव्र चेतना, आत्मीयता, मित्रता और सबसे बढ़कर अपना 'स्वाभिमान' होता है.

आज का मानव अपने तुच्छ आर्थिक लाभ के लिए इन मूक जीवों पर भीषण अत्याचार कर रहा है. जब तक बैल या गाय कर्मठ रहते हैं, हम उन्हें सहलाते हैं, लेकिन जैसे ही वे बूढ़े या असहाय होते हैं, हम उन्हें गया की तरह सूखा भूसा देते हैं या काँजीहौस और दढ़ियल कसाईयों के हवाले कर देते हैं. क्या यह हमारी मानवता का पतन नहीं है?

पशुओं के भी कुछ मौलिक अधिकार हैं, जिन्हें नकारा नहीं जा सकता:

- पहला, उन्हें समय पर पर्याप्त पौष्टिक चारा और स्वच्छ पानी पाने का अधिकार है.
- दूसरा, उन्हें किसी भी प्रकार के शारीरिक उत्पीड़न, लाठियों की मार और जबरन नाथ डाले जाने के दर्द से मुक्ति का अधिकार है.
- तीसरा, उन्हें स्वतंत्र और गरिमापूर्ण जीवन जीने का अधिकार है.

यदि हम स्वयं को इस सृष्टि का सबसे बुद्धिमान जीव मानते हैं, तो यह हमारा परम कर्तव्य है कि हम इन बेज़ुबान पशुओं की मूक-भाषा को समझें, उनके अधिकारों की रक्षा के लिए कानूनी और सामाजिक स्तर पर आवाज़ उठाएं. आइए आज इस बाल-सभा में हम सब यह संकल्प लें कि हम अपने आसपास के किसी भी पशु पर अन्याय नहीं होने देंगे और उनके प्रति सदैव करुणामयी और संवेदनशील रहेंगे.

धन्यवाद! जय हिंद!

3. शीर्षक - इस कहानी के पाँच भाग हैं। कहानी के प्रत्येक भाग को अपने मन से उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

- **उत्तर:** कहानी के पाँचों तार्किक कड़ियों के लिए उपयुक्त शीर्षक निम्नलिखित हैं:
    - **भाग 1 का शीर्षक:** गधा बनाम बैल और हीरा-मोती का भाईचारा
    - **भाग 2 का शीर्षक:** गया के घर घोर अपमान और पहली साहसिक फरारी
    - **भाग 3 का शीर्षक:** नन्हीं बालिका का वात्सल्य और खूंखार साँड़ से महायुद्ध
    - **भाग 4 का शीर्षक:** काँजीहौस की जेल और बेज़ुबान बंदियों की मुक्ति
    - **भाग 5 का शीर्षक:** दढ़ियल बधिक का रौद्र सामना और थान पर विजयोत्सव

मेरी पहेली

अपने समूह के साथ मिलकर ऐसी पहेलियाँ बनाइए जिनके उत्तर निम्नलिखित हों- हीरा, झूरी, मोती, गया, बैल, मटर, रस्सी, रोटी

- **उत्तर:** पाठ के मुख्य तत्वों पर आधारित सुंदर पहेलियाँ इस प्रकार हैं:
    1. **झूरी के लिए पहेली:** "पछाईं जोड़ी का जो सच्चा रखवाला है, जिसके द्वार पर आकर दोनों ने अश्रु ढाला है। बताओ कौन?"

2. **मटर के लिए पहेली:** "हरी-हरी कोमल कली, खेतों में जो खड़ी मिली, खाकर जिसको हीरा-मोती की विपत्ति बढ़ी। बताओ कौन?"
3. **रोटी के लिए पहेली:** "भैरो की बेटी रात को लाती, दो मूक पशुओं की क्षुधा मिटाती, स्नेह का दिव्य स्वाद चखाती। बताओ कौन?"
4. **रस्सी के लिए पहेली:** "काँजीहौस और थान पर जिसने हमें जकड़ा, चबा-चबाकर दांतों से मोती ने जिसे उखाड़ा। बताओ कौन?"

Links और References

अध्याय में दिए गए विभिन्न संदर्भों और उपयोगी कड़ियों का विवरण निम्नलिखित है:

इंटरनेट कड़ियाँ (Links) एवं उनका विवरण:

1. **भारतीय सांकेतिक भाषा संस्थान (ISLRTC):** 👉 https://www.youtube.com/@ISLRTC या https://islrte.nic.in/
   - *उपयोगिता:* यह आधिकारिक सरकारी लिंक छात्रों को सांकेतिक भाषा सीखने में मदद करता है, जिससे वे कहानी में वर्णित पशुओं की 'मूक-भाषा' और बिना शब्दों के संवाद करने की कला को गहराई से समझ सकते हैं।
2. **NCERT Official — दो बैलों की कथा वीडियो:** 👉 https://www.youtube.com/watch?v=cq0Lgg7iM14
   - *उपयोगिता:* इस लिंक के माध्यम से छात्र NCERT द्वारा तैयार की गई इस कहानी की आधिकारिक दृश्य-श्रव्य प्रस्तुति (Animation/Drama) देख सकते हैं, जिससे पाठ अधिक सुगम हो जाता है।
3. **कथा सम्राट प्रेमचंद का जीवन वृत्त:** 👉 https://www.youtube.com/watch?v=3314rJcclul
   - *उपयोगिता:* यह लिंक मुंशी प्रेमचंद के साहित्यिक जीवन, उनके कालखंड और उनके कथा-शिल्प के सौंदर्य को समझने के लिए अत्यंत उपयोगी है।